मेवाड़ का पांच-आयामी युद्ध अभ्यास (1679-1681 ईस्वी):

विस्तृत ऐतिहासिक विश्लेषण एवं प्राथमिक साक्ष्य लेखक: गोविंद मालविया (रियल हिस्ट्री) विषय: भारतीय इतिहास, मेवाड़-मुगल संघर्ष, छापामार युद्ध नीति भाषा: हिंदी प्राथमिक स्रोत: वीर विनोद, राजप्रशस्ति महाकाव्यम्, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, मांगीलाल दुग्गड़ प्रकाशन तिथि: अगस्त 2026

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

मेवाड़ का चक्रव्यूह: जब पांच मोर्चों पर हारा औरंगज़ेब (1679-1681 ईस्वी)

1. परिचय एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1679 से 1681 ईस्वी का मेवाड़-मुगल संघर्ष भारतीय सैन्य इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रामाणिक अध्याय है। जब मुगल सम्राट औरंगज़ेब ने गैर-मुस्लिम प्रजा पर पुनः जज़िया कर लागू किया और मेवाड़-मारवाड़ के धार्मिक व सांस्कृतिक स्थलों को क्षति पहुँचाने का आदेश दिया, तब महाराणा राजसिंह (और उनके पश्चात् महाराणा जयसिंह) ने मुगल सत्ता के विरुद्ध रणनीति बनाई।

महाराणा राजसिंह ने औरंगज़ेब की विशाल तोपखाने वाली मुगल सेना का सामना सीधे मैदानी क्षेत्र में करने के बजाय उजाड़ नीति (स्कॉर्च्ड अर्थ पॉलिसी) और अरावली की पहाड़ियों का उपयोग करते हुए एक पांच-आयामी युद्ध मॉडल तैयार किया। इस युद्ध नीति का मुख्य उद्देश्य मुगल सेना को रसद, अर्थव्यवस्था और मनोवैज्ञानिक मोर्चों पर पूरी तरह परास्त करना था।

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. मेवाड़ के पांच मोर्चों का विस्तृत विश्लेषण

मोर्चा 1: देसूरी दर्रा और अरावली की घाटियाँ

नायक: विक्रम सोलंकी, गोपीनाथ राठौड़ एवं स्थानीय भील योद्धा। रणनीति: अरावली के दर्रों में छापामार घेराबंदी और मनोवैज्ञानिक आघात। विवरण: देसूरी दर्रे (देसूरी नाल) की संकरी घाटियों में मुगल सेनापति तहव्वुर ख़ान, फ़तेह ख़ान और शाहज़ादा मोहम्मद अकबर की टुकड़ियों को चारों तरफ से अरावली की चोटियों पर घेर लिया गया। राजपूतों और भील धनुर्धरों ने ऊपर से चट्टानों और तीर-कमानों से प्रहार किया। युद्ध में मुगल सेनापति फ़तेह ख़ान मारा गया। मुगल

सेना का मनोबल तोड़ने के लिए अधिकारियों के कटे हुए सिरों को छावनी के तोपों और खंभों पर लटका दिया गया, तथा उनकी रसद सामग्री को शाहज़ादा अकबर के शाही तंबू के ठीक सामने जला दिया गया।

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

मोर्चा 2: ठाकुर सांवलदास राठौड़ का बदनौर संग्राम

नायक: ठाकुर सांवलदास राठौड़ (बदनौर स्वामी)। रणनीति: रसद आपूर्ति श्रृंखला का विनाश। विवरण: अजमेर से उदयपुर के बीच मुगल रसद और ख़ज़ाना पहुँचाने की जिम्मेदारी मुगल सेनापति रुहिल्ला ख़ान पर थी। बदनौर के पास अरावली के मार्ग पर ठाकुर सांवलदास राठौड़ ने रात के घने अंधेरे में मुगल शिविर पर अचानक हमला किया। इस छापामार हमले के खौफ से सेनापति रुहिल्ला ख़ान अपना पूरा तंबू, भारी रसद और ख़ज़ाना छोड़कर अजमेर की ओर भाग गया। सांवलदास राठौड़ ने मुगल रसद को जला दिया, जिससे शाहज़ादा अकबर की सेना भुखमरी के कगार पर पहुँच गई।

मोर्चा 3: चित्तौड़-मांडल मोर्चा

नायक: ठाकुर केसरी सिंह गौढ़ व अन्य मेवाड़ सामंत। रणनीति: मुगल प्रशासनिक चौकियों का उच्छेदन। विवरण: चित्तौड़ और मांडल के मैदानी क्षेत्रों में मुगलों द्वारा स्थापित सैन्य चौकियों पर निरंतर हमले किए गए। ठाकुर केसरी सिंह गौढ़ ने अकेले इस क्षेत्र में मुगल सेना के 18 उच्च अधिकारियों को मार गिराया और मुगल डाक व संचार व्यवस्था को पूरी तरह ठप्प कर दिया।

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

मोर्चा 4: दीवान दयाल शाह का मालवा अभियान

नायक: दीवान दयाल शाह (संघवी दयालदास – ओसवाल दीवान)। रणनीति: शत्रु के गृह-क्षेत्र में आक्रामक हमला। विवरण: दीवान दयाल शाह एक ओसवाल प्रशासनिक अधिकारी थे, जिन्होंने सेनापति के रूप में मालवा (मध्य प्रदेश) में मुगल साम्राज्य के विरुद्ध मोर्चा खोला। दयाल शाह ने सारंगपुर, देवास, उज्जैन और मांडू में मुगल थानों को जलाकर नष्ट कर दिया।

अंतिम बलिदान: मालवा अभियान के दौरान मुगल सूबेदार दिलावर ख़ान की सेना से घिरने पर, जब उनकी पत्नी उनके साथ थीं, दयाल शाह ने मुगलों के हाथों बंदी बनने से बचाने के लिए अपनी ही तलवार से अपनी पत्नी का सिर काटकर उनका महाबलिदान किया। तत्पश्चात् वे

मुगल पंक्तियों को चीरकर निकले और भारी मुगल ख़ज़ाना ऊंटों पर लादकर उदयपुर ले आए, जिससे मेवाड़ सेना की रसद की आपूर्ति जारी रही।

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

मोर्चा 5: कुँवर भीमसिंह का गुजरात आक्रमण

नायक: कुँवर भीमसिंह (महाराणा राजसिंह के पुत्र)। रणनीति: मुगल व्यापारिक अर्थव्यवस्था पर प्रहार। विवरण: कुँवर भीमसिंह ने मुगल साम्राज्य के समृद्ध सूबे–गुजरात–में प्रवेश कर ईदर, सिद्धपुर, बड़नगर, अहमदाबाद और सूरत के व्यापारिक मार्गों पर प्रहार किया। उन्होंने मुगल खज़ानों को ज़ब्त किया और औरंगज़ेब को अपनी सेना मेवाड़ से हटाकर गुजरात में लगाने पर मजबूर किया।

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

3. प्रामाणिक प्राथमिक ऐतिहासिक साक्ष्य

यह ऐतिहासिक अध्ययन तत्कालीन शिलालेखों, राज्य बहियों और अकादमिक ग्रंथों पर आधारित है:

1. वीर विनोद (कविराजा श्यामलदास) – भाग 2 (पृष्ठ 466-470): बदनौर में रुहिल्ला ख़ान के पराभव, ठाकुर सांवलदास द्वारा रसद जलाए जाने और दयाल शाह के मालवा आक्रमण का विस्तृत ब्योरा।
2. राजप्रशस्ति महाकाव्यम् (रणछोड़ भट्ट) – सर्ग 21 व 22 (श्लोक 15-30): राजसमंद झील की नौ चौकी पाल पर संस्कृत में उकेरा गया समकालीन शिलालेख, जिसमें देसूरी दर्रे में मुगलों की घेराबंदी और रसद दहन का वर्णन है।
3. मेवाड़ एंड द मुगल एम्परर्स (डॉ. गोपीनाथ शर्मा) – पृष्ठ 163-165: उजाड़ नीति और महाराणा राजसिंह के पांच-आयामी वार मॉडल का अकादमिक विश्लेषण।
4. ओसवाल जाति का इतिहास (मांगीलाल दुग्गड़): मंत्री दयाल शाह (संघवी दयालदास) के प्रशासनिक-सैन्य योगदान, मालवा विजय और उनकी धर्मपत्नी के बलिदान का दस्तावेजीकरण।

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

Mewar's 5-Front Warfare (1679-1681 AD): Detailed Historical Analysis & Primary Evidences

Author: Govind Malviya (REAL HI STORY) Subject: Indian History, Mewar-Mughal Conflict, Guerrilla Warfare Language: English Primary Sources: Vir Vinod, Rajprashasti Mahakavyam, Dr. G.N. Sharma, Mangilal Duggar Publication Date: August 2026

The Maze of Mewar: How Aurangzeb Was Defeated on 5 Fronts (1679-1681 AD)

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

1. Introduction & Historical Context

The Mewar-Mughal conflict of 1679-1681 AD represents a decisive milestone in Indian military history. Following Emperor Aurangzeb's imposition of the Jizya tax and his orders targeting religious structures across Mewar and Marwar, Maharana Raj Singh (and subsequently Maharana Jai Singh) mobilized a structured defense against Mughal expansion.

Rather than engaging the artillery-heavy Mughal force on open terrain, Maharana Raj Singh implemented a Scorched Earth Policy, evacuating the agrarian plains into the defensive valleys of the Aravali range. From this stronghold, Mewar launched a synchronized 5-Dimensional War Model designed to systematically dismantle the economic, supply, and psychological framework of the Mughal Empire.

2. Detailed Analysis of the 5 Fronts

Front 1: Desuri Pass & Aravali Valleys

Commanders: Vikram Solanki, Gopinath Rathore, and local Bhil warriors. Strategy: Guerrilla Trap in Aravali Passes and Psychological Shock. Details: Within the narrow corridors of Desuri Pass, Mughal General Tahawwur Khan, Fateh Khan, and Prince Akbar were trapped in a natural killing zone surrounded by Aravali peaks. Rajput warriors and Bhil archers rained boulders and arrows from above. Mughal commander Fateh Khan was slain. To shatter enemy morale, decapitated heads of fallen Mughal commanders were displayed upon artillery pieces outside the imperial camp, while remaining supplies were burned within sight of Prince Akbar's royal tent.

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

Front 2: Thakur Sanwal Das Rathore at Badnor

Commander: Thakur Sanwal Das Rathore (Lord of Badnor). Strategy: Supply Line Disruption. Details: Emperor Aurangzeb operated his headquarters from Ajmer, relying on commander Ruhilla Khan to transport provisions and gold to Prince Akbar's army. At Badnor, Thakur Sanwal Das Rathore executed a surprise night ambush against Ruhilla Khan's camp.

Overwhelmed by the assault, Ruhilla Khan fled toward Ajmer, abandoning his encampment. Sanwal Das set fire to the imperial supplies, effectively starving Prince Akbar's division.

Front 3: Chittorgarh-Mandal Sector

Commander: Thakur Kesri Singh Gaur and other Mewar Nobles. Strategy: Garrison Elimination. Details: Thakur Kesri Singh Gaur led relentless guerrilla strikes against fortified Mughal outposts across the plains of Chittorgarh and Mandal. Historical records attribute the death of 18 high-ranking Mughal officers in the Chittorgarh sector directly to Kesri Singh's raids, completely severing Mughal communications.

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

Front 4: Dewan Dayal Shah's Malwa Invasion

Commander: Dewan Dayal Shah (Sanghvi Dayaldas — Oswal Minister). Strategy: Offensive Counter-Invasion into Enemy Territory. Details: Dewan Dayal Shah, an Oswal Jain minister, launched an invasion into Malwa, dismantling Mughal command posts from Sarangpur and Dewas to Ujjain and Mandu. The Ultimate Sacrifice: When encircled by Mughal Subedar Dilawar Khan's forces while accompanied by his wife, Dayal Shah decapitated his wife with his own sword to protect her honor from captivity. Transformed by this act, he carved through the siege lines and transported captured imperial treasure back to Udaipur to finance Mewar's defense.

Front 5: Kunwar Bhim Singh's Gujarat Raid

Commander: Kunwar Bhim Singh (Son of Maharana Raj Singh). Strategy: Economic Attack on Mughal Trade Routes. Details: Recognizing that trade routes were the lifeblood of the Mughal Empire, Prince Bhim Singh launched an offensive into Gujarat. Moving through Idar, Siddhpur, and Vadnagar, Bhim Singh's forces struck commercial corridors near Ahmedabad and Surat, capturing Mughal outposts and forcing Aurangzeb to divert troops to safeguard western revenues.

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

3. Primary Historical Evidences

This historical study is grounded in contemporary inscriptions, state records, and academic literature:

1. Vir Vinod (Kaviraja Shyamaldas) — Volume 2 (Pages 466-470): Detailed official record of Ruhilla Khan's retreat at Badnor, destruction of supply lines by Sanwal Das, and Dayal Shah's invasion of Malwa.
2. Rajprashasti Mahakavyam (Ranchhod Bhatt) — Cantos 21 & 22 (Verses 15-30): Contemporary Sanskrit inscription at Rajsamand Lake documenting the trapping of Mughal forces at Desuri Pass and the burning of supplies.

3. Mewar and the Mughal Emperors (Dr. G.N. Sharma) — Pages 163-165: Academic analysis of the Scorched Earth Policy and Maharana Raj Singh's 5-Dimensional War Model.
4. History of the Oswal Community (Mangilal Duggar): Documentation of Dewan Dayal Shah's administrative-military service, Malwa campaign, and his wife's supreme sacrifice.

Conclusion

The Mewar-Mughal War (1679-1681 AD) demonstrates that victory in warfare is governed by military intellect rather than sheer numerical superiority. The synchronized execution of operations across Gujarat, Malwa, Badnor, Chittorgarh, and Desuri Pass irrevocably shattered the perception of Imperial Mughal invincibility, signaling the beginning of the empire's decline under Aurangzeb.

August 6, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).